भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

खेती दुनिया

www.khetiduniyan.in

Excellence in Agri Info

KHETI DUNIYAN

KHETI DUNIYAN, PATIALA

All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

• Issue Dated 25-01-2025• Vol.9 No.04 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

पूसा का कृषि विज्ञान मेला दिल्ली में फरवरी में लगेगा

पूसा आगामी 24-26 फरवरी को नई दिल्ली में पूसा कृषि विज्ञान मेले का आयोजन करने जा रहा है। इसमें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश समेत कई राज्यों से हज़ारों प्रगतिशील किसान हिस्सा लेते हैं। उन्नत कृषि-विकसित भारत थीम पर आधारित यह मेला मेला ग्राउंड, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित होगा। इसमें कृषि योजनाएं, फसल विविधीकरण एवं जलवायु तन्यक कृषि, युवाओं और महिलाओं का उद्यमिता विकास, कृषि विपणन, किसान संगठन एवं स्टार्टअप, डिजिटल खेतीबाड़ी और किसानों के नवाचार मुख्य आकर्षण होंगे।

किसानों, बागवानों को 12 रुपए किलो की दर से गोबर की खाद मुहैया करवाएगी हिमाचल सरकार

सेब के बगीचों में गोबर की खाद डालने के लिए बागवानों को बाहरी राज्यों से खाद नहीं खरीदनी पड़ेगी। सरकार बागवानों को 12 रुपए प्रति किलो की दर से गोबर की खाद उपलब्ध करवाएगा। कृषि मंत्री ने अधिकारियों को बागवानों को खाद उपलब्ध करवाने के निर्देश जारी कर दिए हैं। राज्य के सेब बैल्ट में बारिश व बर्फबारी के बाद तौलिए करने तथा खाद डालने का काम शुरू हो गया है। इसे देखते हुए सरकार ने अधिकारियों को बागवानों से गोबर की खाद के लिए डिमांड मांगने के निर्देश दिए हैं। बागवानों को गोबर की खाद मुहैया करवाने के पीछे सरकार की मंशा अपनी गोबर खरीद की गारंटी को सफल बनाना है।

बाहरी राज्यों से गोबर खरीदते हैं बागवान

अधिकांश किसान और बागवान बाहरी राज्यों या राज्य के अन्य स्थानों से गोबर खरीदते हैं। गोबर की खाद सेब व अन्य कृषि पैदावार के लिए बेहद उपयोगी और गुणकारी मानी जाती है। कृषि विभाग किसानों से 400 क्विंटल से अधिक गोबर की खाद खरीद चुकी है। इसे बागवानों को उपलब्ध करवाने के लिए यह गोबर की खाद 5, 10 और 50 किलोग्राम की पैकिंग में दी जाएगी। कृषि एवं पशु-पालन मंत्री चंद्र कुमार ने कहा कि विभाग के अधिकारियों को बागवानों से गोबर खाद की डिमांड लेने को कहा है, ताकि बागवान को बाहरी राज्यों से गोबर की खाद न खरीदनी पड़े। इससे जहां खरीदी गई गोबर की खाद का उचित उपयोग होगा।

बढ़ता तापमान गेहूं के लिए खतरे की घंटी, कम हो सकता है झाड़

क्लाइमेट चेंज के इफैक्ट से कोई भी अछूता नहीं रह सकता है। जनवरी महीने में पड़ने वाली कड़ाके की ठंड 'गेहूं' में किसानों को अधिक झाड़ और किन्नू में मिठास घोल कर देती है, लेकिन इस बार मौसम अपने अलग ही तेवर दिखा रहा है। यहां तक की मौसम विशेषज्ञ भी लगातार बदल रही तस्वीर से वाकिफ नहीं हो पा रहे हैं। पिछले दिनों में मौसम विशेषज्ञों ने लगातार एक साथ दो वैस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव होने का अनुमान जताया था, मगर मौसम ने ऐसी पलटी खाई कि बारिश तो नहीं हुई, बल्कि लगातार दो दिन निकली चटक धूप ने दिन का तापमान 23 डिग्री सैल्सियस जबकि न्यूनतम को 10 डिग्री के पास पहुंचा दिया। इतना तापमान फरवरी के दूसरे सप्ताह में चाहिए होता है, जब गेहूं की फसल तैयार हो रही होती है।

ऐसे में अब किसानों को अपनी फसल को लेकर चिंता सताने लगी है कि अगर आने वाले दिनों में बारिश नहीं होती है, तो गेहूं को नुकसान हो सकता है। गेहूं समय से पहले पक कर तैयार तो होगी ही, इसके साथ ही दाना भी काला पड़ेगा और झाड़ भी कम हो सकता है। ऐसे में किसान इसी डर में फसल को 15 दिन पहले ही पानी और ज्यादा खाद देने लगे हैं, ताकि फसल मुरझा न सके। ऐसे में अन्नदाता भगवान से बारिश होने की दुआ मांग रहा है, ताकि फसल को जरूरत अनुसार पानी मिल सके और सही समय पर तैयार हो सके।

लगातार एक्टिव हो रहे वैस्टर्न डिस्टरबैंस पड़ रहे कमज़ोर

चंडीगढ़ मौसम विभाग के साइंटिस्ट शिविंदर सिंह ने बताया कि इस समय मौसम में सबसे बड़ा बदलाव बारिश का न होना है। वहीं दूसरी तरह हवा में नमी की मात्रा कम होना भी इसका एक कारण है कि जनवरी में ही दिन का तापमान 23 डिग्री के

पास पहुंच गया है, जो सामान्य 6-7 डिग्री ज्यादा है। पिछले वर्ष जनवरी के महीने में इन दिनों दिन का तापमान 10 से 11 डिग्री सैल्सियस था। लोगों को पूरा एक महीना सूरज देव के दर्शन नहीं हो सके थे, लेकिन इस बार जनवरी में केवल 4 या 5 दिन कोहरा पड़ा है, जबकि बाकी दिनों में अच्छी धूप निकली है, जो अभी से लोगों को दिन के समय में गर्मी का अहसास करवा रही है।

गेहूं की फसल को 15 मार्च तक जरूरत होती है ठंडक की

कृषि माहिरों का कहना है कि खेतों में तैयार हो रही गेहूं की फसल को 15 मार्च तक ठंडक की जरूरत होती है। इसके बाद ही किसान भगवान से बारिश न होने की गुहार लगाता है, लेकिन इस बार फिर से उलट देखने को मिल रहा है। अभी कुछ स्थिति ठीक है, लेकिन अगर बारिश न हुई तो किसानों के लिए मुश्किल पैदा हो सकती है।

2 फरवरी के पास एक्टिव होगी वैस्टर्न डिस्टरबैंस

बारिश की संभावना अब 2 फरवरी के बाद ही है, क्योंकि उन दिनों में एक वैस्टर्न डिस्टरबैंस एक्टिव होने जा रही है, इससे मौसम माहिरों को उम्मीद है कि बारिश होगी तो लोगों को एक बार फिर से ठंडक का अहसास होना शुरू हो जाएगा। इससे तापमान में भी गिरावट दर्ज होगी।

एक टोकरी पर खर्च 800 रुपए, उत्पादन 4000 का, एक माह बाद पैदावार शुरू

प्लास्टिक की टोकरी में ढींगरी की खेती, 100 किसान जुटे

सर्दी के सीज़न में होशियारपुर ज़िले के 100 किसान ढींगरी मशरूम की खेती कर रहे हैं। इसे ओस्टर के नाम से भी जाना जाता है। इससे उनको अच्छा मुनाफा हो रहा है। सेहत के लिए मददगार ढींगरी मशरूम में फाइबर, प्रोटीन, विटामिन-डी, कैल्शियम, विटामिन-ए की भरपूर मात्रा होती है। यह वेट मैनेजमेंट, ब्लड शूगर, कोलेस्ट्रोल, हड्डियों की सेहत, पाचन शक्ति, आंखों की सेहत को सुधारने में मदद करती है।

गांव महिलावाली, ज़िला होशियारपुर के किसान संजीव कुमार ने इस सीज़न में प्लास्टिक की टोकरी में तूड़ी भरकर मशरूम की सफल पैदावार की है। इन्होंने बताया कि सर्दियों में प्लास्टिक के लिफाफे में तूड़ी भर कर भी मशरूम उगाई जा सकती है, लेकिन प्लास्टिक की टोकरी को एक से दूसरी जगह ले जाना आसान

है, वहीं इसमें पैदावार भी अधिक हो रही है। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, बाहोवाल से इस काम की 5 दिन की ट्रेनिंग ली है। इसके बाद दिसंबर 2024 में काम शुरू किया था। अब वह अपनी मशरूम किसान मंडी में लेकर जाएंगे।

संजीव के अनुसार एक टोकरी में 10 किलो तूड़ी डाल कर मशरूम का 800 ग्राम बीज डाला जाता है, जो बागवानी विभाग से प्रति पैकेट 60 रुपए में मिल जाता है। बीज डालने के एक महीने बाद मशरूम काटने के लिए तैयार हो जाती है। फिर आने वाले 30-35 दिन एक जगह से मशरूम मिलती रहती है। उन्होंने अक्तूबर से लेकर जनवरी तक अलग-अलग टोकरियों में बीज डाला हुआ है। अब मार्च तक मशरूम मिलती रहेगी। एक टोकरी से 10 किलो मशरूम निकलती है, जिसकी बाज़ार में कीमत 4 हज़ार रुपए बनती है। इस पर खर्च महज 700-800 रुपए तक आता है।

डॉ. जसविंदर सिंह बोले - नौजवानों के लिए बढ़िया रोज़गार

बागवानी विभाग के डिप्टी डायरैक्टर डॉ. जसविंदर सिंह ने बताया कि सर्दी के 6 महीनों में नौजवान मशरूम के जरिये अच्छा काम कर मुनाफा कमा सकते हैं। इसकी बाज़ार में अच्छी मांग रहती है। एक कमरे में जहां सीधी रोशनी न पड़ती हो, वहां पर इसकी पैदावार की जा सकती है।

सरकार ऐसी आयात- निर्यात नीति अपनाए

जो किसानों के हक में हो

अजय शर्मा

दुनिया भर में जिन किसानों ने विविधता की तरफ जाने की बजाय धान-गेहूं जैसी एक ही प्रकार की खेती का सिलसिला जारी रखा, वे खुद ही धीरे-धीरे कमज़ोर होते गए। आज गेहूं-धान की खेती पर आधारित किसान हाशिए पर जाने से बचने के लिए आंदोलनरत हैं। उनकी प्रमुख मांग है कि एम.एस.पी. देकर इस गेहूं-धान वाली खेती को बरकरार रखा जाए।

जिन फसलों की एम.एस.पी. सर्वविदित है, उनको किसान अपनी मनचाही कीमत पर बेच नहीं सकता, इसलिए एम.एस.पी. वाली फसलें किसानों को आगे बढ़ने से रोकती हैं। किसानों का असल मुद्दा है कि उनकी प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाया जाए, जिसके प्रति सरकारें उदासीन हैं।

यह केवल किसानों का ही नहीं, पूरे देश का मुद्दा है। यह एक आंदोलन से, सड़क पर बैठ कर हल होने वाला मसला नहीं है और यह किसी एक नेता या एक सरकार के हाथ में भी नहीं है। इसके लिए पूरे देश में एक मिशन चलाना आवश्यक है। एम.एस.पी. मिल जाने से भी किसान इस दलदल से बाहर नहीं आएंगे। विश्व भर में ऐसे संकटों से निपटने के लिए किसानों ने आंदोलन के स्थान

पर कुछ दूसरे ही रास्ते अपनाए, जोकि भारत के संदर्भ में भी बहुत कारगर हो सकते हैं।

खेती में अग्रणी देशों में बहुत छोटी जनसंख्या ही किसानी कर रही है, खेती का पूरा मशीनीकरण हो चुका है; कृषि केवल 1-5 प्रतिशत ही जी.डी.पी. पैदा करती है व दूसरे वैकल्पिक व्यवसाय अधिक आमदनी व रोज़गार देते हैं।

जितना देश अमीर, उतनी ही वहां खेतों की उत्पादकता अधिक, खेत मशीनीकरण अधिक, किसान जनसंख्या थोड़ी और कृषि से होने वाली जी.डी.पी. थोड़ी। किसान जानता है कि इतनी बड़ी जनसंख्या किसानों से रोज़ी-रोटी नहीं जुटा पाएगी, इसलिए उनके बच्चों ने खेती से हट कर नौकरी और व्यवसाय में अपने लिए जिंदगी बनाना शुरू कर दिया है।

परिवार व ज़मीनों के बंटने से भी किसान कमज़ोर हुए व वैकल्पिक व्यवसाय अपनाने लगे। एक तरह से किसान अपनी ज़मीन के शहरीकरण होने और उस ज़मीन को बेच कर पैसे कमाने के अवसर का इंतजार कर रहे हैं। किसानों में मशीनीकरण बढ़ेगा और किसानों की संख्या कम होगी, परन्तु खेती का व्यवसाय रहेगा, बढ़ेगा और आकर्षक होगा।

भारत में सन 2030 तक खाद्यान्नों की सालाना जरूरत 350 मिलियन टन को पार कर जाएगी और 2050 तक यह 400 मिलियन टन को पार करेगी। अभी हम लगभग 320 से 325 मिलियन टन खाद्यान्न ही उगा पाते हैं। अन्न की मांग को पूरा करने के लिए खेती को बहुत उन्नत करने, उत्पादकता बढ़ाने और मशीनीकरण की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए किसानों के पास पर्याप्त आमदनी होना आवश्यक है, चाहे किसी वैकल्पिक स्त्रोत से हो। सभी को रोज़गार देने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों का भी औद्योकिकीकरण होना आवश्यक है।

केवल किसानी को ही उन्नत करके भी पूरी नई पीढ़ी के लिए एक बढ़िया जीवन स्तर नहीं मिलेगा। किसानी हमेशा अनिश्चितता से जुड़ी रहेगी, इसलिए किसान हमेशा, किसी भी देश का हो, परेशान रहेगा। भारत में किसानों के उत्थान हेतु देश व किसान दोनों साथ-साथ अमीर बनें। कोई एक अमीर बने और दूसरा न बने, ऐसा होना दोनों के लिए नुकसानदायक है।

किसानों को खेती में विविधता लाने के साथ अपनी खेती पर आधारित जनसंख्या को कम करना होगा। साथ ही खेती में मशीनीकरण करना होगा, ज्यादा मुनाफा देने वाली और ज्यादा कीमती फसलों जैसे कि बीमारियों से लड़ने वाले अन्न, लो ग्लूटामिक, हाई प्रोटीन, हाई फाइबर, कैमिकल फ्री अन्न, विदेशी फल व सब्ज़ियां, मिलेट्स और प्राकृतिक किस्म के अन्न उगाने चाहिए। इनमें से बहुत तरह की फसलें उगाई भी जा रही हैं और पैसा कमाने के नए उदाहरण स्थापित हो रहे हैं।

एम.एस.पी. पर बिकने वाली फसलों में खेती की ज़मीन लगाना किसी भी देश व किसानों के लिए हानिकारक है। एम.एस.पी. मांग पर गेहूं-धान वाली पद्धति को अपने जीवन में स्थिर करना, किसानों के लिए अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है।

खेती में भी अधिक उत्पादकता वाली फसलों को उगाया व लाया जाना बहुत आवश्यक है। इसमें सरकार व सरकारी संस्थाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। इसके लिए त्वरित काम होना चाहिए।

फसलों की उचित कीमत केवल मार्केट ही दे सकती है, सरकार नहीं। एक चरणबद्ध तरीके से किसानों को अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा किसी विशेष खेती में लगाना व धीरे-धीरे इसका क्षेत्रफल बढ़ाना होगा, ताकि उनका मनचाही आमदनी का साधन बढ़ता जाए। सरकार ऐसे किसानों को आसान ऋण उपलब्ध करवाए, तो अगले 10 वर्षों तक इस विशेष प्रकार की खेती को बढ़ाएं।

सरकार को ऐसी आयात-निर्यात नीति अपनानी चाहिए, जो भारतीय किसानों के हक में हो। इन नीतियों व संबंधित बजट को लम्बे समय तक स्थिर रखना चाहिए। फसल की कीमतें जितनी स्थिर रहेंगी, किसानी में बदलाव लाना उतना ही आसान होगा।

सरकार ने कृषि उपकरण किराए पर उपलब्ध करवाने की एक स्कीम चलाई थी, जिसमें ग्रामीण नवयुवकों को रोज़गार मिलने के मौके भी थे, परन्तु उस योजना का भी लाभ किसानों में दिखाई नहीं दे रहा है। सरकार अपने कार्यक्रमों के बारे में खूब प्रचार करे।

बड़े पैमाने पर विकसित खेती के लिए किसानी में पैसे की इंवैस्टमैंट बहुत जरूरी है। किसानों को अपने तौर पर, प्राइवेट अथवा को-ऑप्रेटिव के साथ मिल कर सरकारी जानकारी में खेती में पैसा लगवाना चाहिए। अब किसानों को कांट्रैक्ट फार्मिंग व कॉर्पोरेट फार्मिंग के लिए संस्थाएं बना कर इतना अच्छा कार्य करना होगा कि स्थानीय लोग इन संस्थानों में पैसे लगाएं। इस प्रकार के नए तरीके निकालना बहुत जरूरी है।

होशियारपुर के लिए बनाई योजना, बाद में दूसरे ज़िलों में होगी लागू

धान से मुक्ति पाने के लिए सरकार खेत लीज पर लेकर करेगी पोपलर की खेती

धान की फसल अधिक पानी पीती है। इसके कारण पंजाब के कई ज़िलों में भूजल बहुत नीचे चला गया है। इसकी वजह से भविष्य में बनने वाले मरुस्थलीय हालात के मद्देनज़र सरकार सतर्क और चिंतित है। धान से मुक्ति पाने के लिए वह सर्वाधिक वन क्षेत्र वाले होशियारपुर ज़िले में एक योजना लांच करने जा रही है। सफल रहने पर इसको अन्य ज़िलों में लागू किया जाएगा। वह किसानों से ज़मीन लीज़ पर लेकर सफेदा और पोपलर की खेती करेगी।

सूत्रों के अनुसार, सरकार ने इस प्रोजैक्ट के लिए सबसे पहले होशियारपुर ज़िले को चुना है। इस योजना के तहत पहले उन किसानों और ज़मीनों की निशानदेही की जा रही है, जो हर साल धान की खेती करते हैं। इसके बाद सरकार जंगलात विभाग और दूसरे विभागों के जरिये इन किसानों तक पहुंच करेगी। वह उन्हें योजना की जानकारी देगी। जो किसान सरकार को अपनी ज़मीन 5 साल तक लीज़ पर देने के लिए तैयार होंगे, उनके साथ सरकार एक करार करेगी। फिर उस ज़मीन पर सफेदा और पोपलर की खेती करेगी। इस योजना की अगुवाई जंगलात विभाग करेगा। पंजाब एग्रो इसमें हिस्सा ले रहा है। जरूरत पड़ने पर अन्य विभागों की भी मदद ली जा सकती है। खेतीबाड़ी विभाग के अनुसार, ज़िले में पिछले सीज़न के दौरान 79 हज़ार हैक्टेयर में धान की खेती की गई थी। सूबे में वर्ष 2022-23 के दौरान 31.68 लाख हैक्टेयर में धान की खेती की गई थी, जिससे 205.24 लाख टन पैदावार हुई थी।

बताया जाता है कि इस योजना के संबंध में प्रस्ताव तैयार किया जा चुका है। आने वाले दिनों में लीज़ का मूल्य निर्धारित किया जाएगा। आने वाले दिनों में लीज़ का मूल्य निर्धारित किया जाएगा। अपनी सरकार को लीज़ पर देने के बाद किसान के पास यह विकल्प रहेगा कि वह स्वयं भी इस प्रोजैक्ट में काम कर आमदनी हासिल कर सके। सूत्रों के अनुसार, इस योजना को इसी साल के दौरान लागू किया जाएगा। होशियारपुर में लीज रेट 35000 से 38000 रुपए प्रति एकड़ है।

जंगलात विभाग के कंजर्वेटर संजीव तिवाड़ी के मुताबिक, इस योजना के लागू होने से किसानों और राज्य सरकार, दोनों को जहां फायदा होगा, वहीं धान की फसल कम होने से भूजल भी बचेगा।

एकड़ में 5 साल में 6 लाख रुपए तक की आमदनी

होशियारपुर में पंजाब की बड़ी लक्कड़ मंडी है। होशियारपुर-दसूहा रोड पर प्लाई बनाने वाली कई छोटी-बड़ी कम्पनियां स्थापित हैं। इसके कारण पिछले 6-7 साल से यहां लक्कड़ का भाव अच्छा है। पोपलर-सफेदा 5 साल में काटने के लिए तैयार हो जाते हैं, जो किसानों को अच्छा मुनाफा देते हैं। इसी कारण पिछले सालों के दौरान होशियारपुर ज़िले में प्राइवेट जंगल का रकबा बढ़ा है। पहले वन्य क्षेत्र में 50 लाख पौधे होते थे। मौजूदा समय में यह संख्या 1.50 करोड़ तक पहुंच चुकी है। एक एकड़ में 650 पौधे लगते हैं, 30 हज़ार रुपए खर्च आता है और 5 साल में 6 लाख तक कमाई होती है।

डॉ. प्रेम चन्द शर्मा, प्राध्यापक (कीट विज्ञान) एवं अधिष्ठाता, कृषि संकाय अभिलाषी विश्वविद्यालय, चैलचौक, ज़िला मण्डी–175028 (हिमाचल प्रदेश)

गोभीवर्गीय सब्ज़ियों में कीट नियंत्रण कैसे करें?

गोभीवर्गीय सब्ज़ियों की सब्ज़ियों में बन्दगोभी, फूलगोभी, ब्रोकली तथा गांठगोभी इत्यादि प्रमुख हैं। यह सब्ज़ियां किसानों की आय का प्रमुख साधन हैं। कीटों के आक्रमण से इन सब्ज़ियों के उत्पादन में लगभग 20 से 25 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। ये कीट सब्ज़ी उत्पाद की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। इस लेख में गोभीवर्गीय सब्ज़ियों में हानि पहुंचाने वाले प्रमुख कीटों तथा उनके प्रबंधन के बारे में बताया गया है।

1. डायमण्ड बैक मॉथ : इस कीट का प्रौढ़ पतंगा स्लेटी रंग का होता है, जिसके अगले पंखों पर सफेद हीरे जैसी आकृति बनती है। इस कीट की सुण्डियां हरे रंग

की होती हैं, जो छूने पर एकदम उछलती हैं। पत्तों को हिलाने पर ये धागे जैसे पदार्थ की सहायता से नीचे लटक जाती हैं। छोटी सुण्डियां पत्तों को खुरच कर खाती हैं तथा सफेद झिल्ली शेष छोड़ती हैं। बड़ी सुण्डियां पत्तों पर गोल सुराख बना देती हैं। पत्ते नष्ट होने पर सब्ज़ियों की पैदावार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. बन्दगोभी की तितली : इस तितली की सुण्डी मखमली

गहरे हरे रंग की होती है, जिस पर धब्बे पीले रंग की धारियां तथा सफेद बाल होते हैं। नवजात सुंडियां समूह में रह कर पत्तों को खाती रहती हैं, जबकि बड़ी सुण्डियां खेत में फैल कर पत्तों को छलनी कर देती हैं। अधिक प्रकोप की अवस्था में पत्तों की शिराएं ही शेष रह जाती हैं तथा उपज में कमी आ जाती है।

3. सेमीलूपर : इस कीट की सुण्डियां हरे रंग की होती हैं तथा चलते समय सुण्डी के शरीर पर कूबड़ जैसा बन जाता है। यह सुण्डियां भी बन्दगोभी की तितली की सुण्डियों की तरह पत्तों व फूलों को खाकर फसल को हानि पहुंचाती हैं।

सुण्डियों का प्रबंधन : बन्दगोभी की तितली के अण्डों व सुण्डियों को एकत्रित करके नष्ट कर दें। कीट प्रकोप होने पर 1 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ई.सी. या 2 मिलीलीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. या 1 मिलीलीटर साइपरमैथरिन 10 ई.सी. या 1.5 मिलीलीटर नोवाल्युरॉन 10 ई.सी. या 1 मिलीलीटर स्पाइनोसैड 2.5 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। छिड़काव के बाद 7 दिनों तक सब्ज़ी का प्रयोग न करें। बन्दगोभी की 25 कतारों के बाद सरसों की 2 कतारें लगाने से भी इस कीट का प्रकोप मुख्य फसल पर कम हो जाता है।

4. तम्बाकू की सुण्डी : व्यस्क कीट भूरे रंग के पतंगे होते हैं, जिनके पंखों पर काली सफेद

मखमली धारियां होती हैं। मादा कीट पत्तों की निचली सतह पर समूह में अण्डे देते हैं, जिन्हें रूई जैसे पदार्थ से ढक दिया जाता है। इन अण्डों से गहरे रंग की सुण्डियां निकलती हैं, जो शुरू की अवस्था में इकट्ठी रहती हैं तथा बड़े होने पर पूरे खेत में फैल कर पत्तों को पूरी तरह नष्ट कर देती हैं। फल आने पर ये सुण्डियां फलों को भी कट कर देती हैं।

प्रबन्धन : सुण्डियों को प्रारम्भिक अवस्था में ही इकट्ठा कर नष्ट कर दें। बड़ी सुण्डियों पर अधिकतर कीटनाशकों का कोई असर नहीं होता है। फिर भी 1 मिलीलीटर साइपरमैथरिन 10 ई.सी. या 0.4 ग्राम इमामैक्टिन बैन्जोएट 5 एस.जी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करने से नियंत्रण किया जा सकता है। जैविक कीटनाशी एन.पी.वी. से बनी सपोडोकिल का प्रयोग नवजात सुण्डियों पर बताई गई मात्रा में छिड़काव किया जा सकता है।

5. तेला कीट : यह कीट

हरे पीले रंग या हल्के काले भूरे रंग के होते हैं तथा पत्तों, शाखाओं व फूलों से जूं की तरह चिपके रहते हैं। दिसम्बर से मार्च तक ये कीट पौधों को हानि पहुंचाते हैं। ये कीट समूह में रह कर पौधों से रस

शेष पृष्ठ 6 पर

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 09 अंक : 04

तिथि : 25-01-2025

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्ठिडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher **JAGPREET SINGH**
Printed at **Drishti Printers,** Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market,Gaushala Road, PATIALA &
Published at Patiala for **Prop. JAGPREET SINGH**

मधुमक्खी पालक किसान सुभाष कांबोज सम्मानित

गांव हाफिजपुर के मधुमक्खी पालक प्रगतिशील किसान सुभाष कांबोज को भारत सरकार की और से दिल्ली में 26 जनवरी को 76वें गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण मिला, जिसमें वे भारत सरकार के 4 दिन तक मेहमान होंगे।

उन्होंने बताया कि भारत सरकार की ओर से उन्हें 4 दिन के लिए दिल्ली में आने के लिए निमंत्रण दिया गया है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के अनुसार उनको 25 जनवरी को दिल्ली बुलाया है, फिर वहां 25 से 28 जनवरी तक अलग-अलग कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। इसमें 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस की परेड वी.आई.पी. गैलरी में बैठकर देखने का मौका भी मिलेगा।

27 और 28 जनवरी को उन्हें दिल्ली के प्रसिद्ध स्थानों पर भ्रमण के लिए ले जाया जाएगा। इस दौरान सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के कार्यक्रम में भी शामिल रहेंगे। गौरतलब है कि हाफिजपुर के मधुमक्खी पालक प्रगतिशील किसान सुभाष कांबोज देश में उस समय सुर्खियों में आए, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इनका दो बार जिक्र किया था और उनके मधुमक्खी पालन कार्य की सराहना की थी।

यमुनानगर के गांव हाफिजपुर के मधुमक्खी पालक प्रगतिशील किसान सुभाष कांबोज।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के अन्य किसानों को भी सुभाष कांबोज की तरह ही वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षण लेकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित किया था। उन्हें मुख्यमंत्री मनोहर लाल, पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी के अलावा कृषि विज्ञान केन्द्र दामला, चौ. चरण सिंह एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हिसार, उद्यान विभाग, आई.बी.डी. सी. रामनगर और प्रदेश व देश में कई मंचों पर सम्मानित किया जा चुका है। सन् 1996 से पहले निजी स्कूल में शिक्षक के रूप में कार्य कर चुके किसान सुभाष कांबोज ने बताया कि उन्होंने मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने मात्र छह बॉक्स से मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया था।

आज उनके पास दो हज़ार से ज्यादा मधुमक्खी पालन के बॉक्स हैं। वे स्वयं पूरे देश में शहद की बिक्री करते हैं। आज उनका शहद हरियाणा, कर्नाटक, तामिलनाडू, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल के अलावा विदेशों में भी बिकता है। उन्होंने अब तक एक हज़ार से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है।

दुधारू पशुओं को प्रोटीन-वसा से लैस संतुलित आहार दें पशु-पालक

ठंड के चलते पशु-पालन विभाग ने एडवाइजरी जारी की। विभाग के डिप्टी डायरैक्टर डॉ. सुखविंदर सिंह के मुताबिक, सर्दी का मौसम चल रहा है। यदि

दुधारू पशुओं के रहन-सहन और आहार का ठीक प्रकार से प्रबंध नहीं किया, तो पशुओं की तबीयत खराब हो सकती है। दूध उत्पादन में गिरावट आ सकती है। ठंड मौसम में पशु-पालक अपने पशुओं को संतुलित आहार दें। आहार में ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व, पानी, विटामिन, वसा आदि पोषक तत्व मौजूद हों। ठंड के दिनों में पशुओं के खान-पान और दूध निकालने का समय एक ही रखना चाहिए। शीतलहर में पशु की खोर के ऊपर सेंधा नमक का ढेला रखें, ताकि पशु जरूरत के उसे चाटता रहे। सर्दी में पशुओं को सिर्फ हरा चारा खिलाने से अफारा व अपचन भी आ सकता है। ऐसे में हरे चारे के साथ सूखा चारा भी खिलाएं। पशुओं को सर्दी के मौसम में गुनगुना, ताजा व स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाएं।

गेहूं में ज़िंक की कमी के लक्षणों की पहचान सिखाई

गेहूं में खरपतवार, पोषक तत्व और कीट प्रबंधन में नवीनतम प्रगति के बारे में जागरूकता बढ़ाने को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी.ए.यू.) फार्म सलाहकार सेवा केन्द्र (एफ.ए.एस.सी.), संगरूर ने भवानीगढ़ के पास रामपुरा में एक ग्राम स्तरीय शिविर आयोजित किया। पी.ए.यू., लुधियाना के विस्तार शिक्षा निदेशक के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय किसानों और प्रगतिशील उत्पादकों ने सक्रिय भागीदारी की। डॉ. अशोक कुमार (ज़िला विस्तार वैज्ञानिक-सह- प्रभारी, एफ.ए.एस.सी. संगरूर) ने रबी फसलों में खरपतवार और पोषक तत्व प्रबंधन पर एक विस्तृत सत्र दिया। उन्होंने किसानों को गेहूं और बरसीम में मैगनीज़ और ज़िंक की कमी के लक्षणों की पहचान करने के बारे में शिक्षित किया और सुधारात्मक उपाय प्रदान किए। उन्होंने गेहूं में पोटाशियम नाइट्रेट के उचित प्रयोग के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने मिट्टी के नमूने, चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार और गुल्ली डंडा को नियंत्रित करने के लिए उपयुक्त खरपतवारनाशी तथा सल्फर के प्रयोग के संबंध में किसानों के प्रश्नों का समाधान किया।

डॉ. कुमार ने अनाज भरने के चरण के दौरान उच्च तापमान से निपटने के लिए एक उपाय के रूप में पोटाशियम नाइट्रेट स्प्रे की सिफारिश कर रणनीतियों पर प्रकाश डाला। किसानों के लिए खनिज मिश्रण, पी.ए.यू. साहित्य, यू.एम.एम.बी. और बाईपास वसा को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी। पी.ए.यू. के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़े बारकोड वाला एक बैनर भी प्रदर्शित किया गया, जिससे किसानों को कृषि संबंधी अपडेट आसानी से मिल सके। इस कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान यादविंदर सिंह, बलजिंदर सिंह और रामपुरा गांव के सरपंच रणजीत सिंह उपस्थित थे।

अब किसान आंदोलन के अगले दौर की तैयारी

योगेन्द्र यादव

किसान आंदोलन इस पड़ाव से आगे कैसे बढ़ेगा? एम.एस.पी. के मुद्दे पर राष्ट्रीय संघर्ष को अगले पड़ाव तक ले जाने का काम कौन करेगा? यह ऐतिहासिक मुहिम अंतिम मुकाम तक कैसे पहुंचेगी? किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल द्वारा 55 दिन अनशन के बाद डॉक्टरों की सलाह मुताबिक मैडिकल सहारा लेने के निर्णय के उपरांत ये सवाल किसान आंदोलन के सामने मुंह बाए खड़े हैं।

इन सालों पर आने से पहले यह दर्ज करना जरूरी है कि डल्लेवाल के इस ऐतिहासिक अनशन ने एम.एस.पी. के सवाल को एक बार फिर राष्ट्रीय पटल पर पहुंचा दिया है। संयुक्त किसान मोर्चे के तत्वावधान में हुए ऐतिहासिक दिल्ली मोर्चे ने देश के सभी किसानों तक 'एम.एस.पी.' शब्द पहुंचा दिया था। पहली बार बहुत से किसानों को पता चला कि सरकार हर साल उन्हें एम.एस.पी. नामक न्यूनतम मूल्य पर समर्थन देने का वादा करती है, जो उन्हें वास्तव में हासिल नहीं होता। लेकिन धीरे-धीरे यह सवाल जनता के मानसपटल से ओझल होने लगा था। सरकार भी एम.एस.पी. के सवाल पर एक पालतू कमेटी बना कर सो गई।

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और इंडिया गठबंधन की अन्य पार्टियों द्वारा अपने घोषणा पत्रों में एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी की मांग को शामिल करने से इस मुद्दे को बल दिया लेकिन कुछ वक्त के लिए ही। एस.के.एम. (अराजनीतिक) और किसान मज़दूर समिति द्वारा चलाए गए इस आंदोलन को इस बात का श्रेय जरूर दिया जाना चाहिए कि इस मुश्किल दौर में उन्होंने इस मुद्दे को जिंदा रखा और देश के किसानों के संघर्ष को इस मुकाम तक पहुंचाया।

इसके बावजूद आज एम.एस.पी. आंदोलन के भविष्य पर सवाल इसलिए है कि अब आगे का रास्ता साफ नज़र नहीं आता। बेशक इस मोर्चे में शामिल किसान संगठनों ने यह स्पष्ट किया है कि आंदोलन स्थगित नहीं किया गया है। डल्लेवाल ने भी यह घोषणा की है कि डॉक्टर के इलाज के अलावा वह अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। इस लिहाज से उनका अनशन जारी है। लेकिन जाहिर है कि डॉक्टरों द्वारा ड्रिप और इंजैक्शन के जरिए दिए गए पोषण से डल्लेवाल के जीवन पर मंडरा रहा संकट टल गया है। साथ ही सरकार के सिर पर लटकी तलवार भी हट गई है।

यह भी सच है कि पंजाब और हरियाणा के बीच खनौरी और शम्भू बॉर्डर पर एक साल से ज्यादा समय से चल रहा किसान आंदोलन अगर सरकार को झुकाने की स्थिति में होता, तो डल्लेवाल के आमरण अनशन की नौबत ही न आती।

सवाल इसलिए और गहरा होता है, क्योंकि इस मुद्दे पर सरकार की नीयत साफ नहीं है। या यूं कहें कि यह साफ है कि केन्द्र सरकार एम.एस.पी. की मांग को स्वीकार करने वाली नहीं है। पहले 50 दिन तक सरकार ने किसान आंदोलन से बात करना भी गवारा नहीं समझा। फिर किसी राजनीतिक प्रतिनिधि या कृषि विभाग के सचिव को भेजने की बजाय सिर्फ एक ज्वॉयंट सैक्रेटरी रैंक के अफसर को भेजा। जो चिट्ठी दी, वह भी इतनी गोल-मोल है कि उससे यह भी पता नहीं चलता कि किसानों की वार्ता किससे होगी और किन मुद्दों पर होगी।

यूं भी पिछली बार किसानों को लिखी चिट्ठी के वादों से मुकरने वाली सरकार पर किसान कैसे भरोसा करें? वार्ता में पंजाब के मंत्रियों को बुलाने से यह अंदेशा

होता है कि केन्द्र सरकार इसे राष्ट्रीय मुद्दे की बजाय पंजाब के किसानों के विशेष पैकेज तक सीमित रखने की चाल चल सकती है। ऐसी वार्ताओं के इतिहास से यही सबक मिलता है कि तारीख पर तारीख लगती जाएगी, सरकार चाय-बिस्किट पेश करती रहेगी, मीटिंग और मिनट्स से फाइलों का पेट भरता रहेगा।

मुद्दे की बात, यानी एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी को छोड़ कर सरकार बाकी सब मुद्दों पर बात करेगी - फसल-चक्र का डाइवर्सिफिकेशन, पराली जलाने की समस्या, पंजाब की फसल खरीदी की सीमा आदि। पंजाब को वार्ता का स्वांग करना है, इससे न कुछ निकलना है, न कुछ निकलेगा।

यानी एक बात साफ है। किसान आंदोलन के नवीनतम प्रयास से जो हासिल हुआ है, वह कोई छोटी बात नहीं है। लेकिन सिर्फ इसके सहारे देश भर के किसानों के लिए एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी हासिल करना मुमकिन नहीं। इस संघर्ष को अंतिम मुकाम तक ले जाने के लिए एक और भी बड़े और राष्ट्रव्यापी आंदोलन की जरूरत होगी। ऐसे आंदोलन की योजना बनाते वक्त निम्न चुनौतियों का सामना करना होगा।

पहली, एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी की मांग लागू करने का एक सोचा-समझा खाका पेश करना होगा। अक्सर किसान आंदोलन में इस मांग को या तो सिर्फ एम.एस.पी. से नीचे खरीद-फरोख्त पर कानूनी बंदिश लगाने या फिर सभी फसलों की सारी मात्रा की सरकारी खरीद की मांग के रूप में पेश किया जाता है। इससे किसान आंदोलन के विरोधियों को इस मांग को खारिज करने का मौका मिल जाता है।

पिछले कुछ समय से कई किसान संगठन (जिनसे इन पंक्तियों का लेखक भी जुड़ा है) इस मांग का एक व्यावहारिक मॉडल पेश कर रहे हैं, जिसे अपनाने से किसी भी तार्किक चर्चा में किसान आंदोलन के हाथ मज़बूत हो जाएंगे।

दूसरी, आंदोलन के अगले पड़ाव में इस संघर्ष को देशव्यापी बनाना पड़ेगा - पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और पूर्वोत्तर राजस्थान के किसानों के साथ-साथ बाकी देश के किसानों, गेहूं और धान के अलावा मोटे अनाज, दलहन, तिलहन, फल-सब्ज़ी और दूध-अंडे के उत्पादकों तथा छोटी जोत वाले किसान, बटाईदार और खेतिहर मज़दूर को भी इस संघर्ष से जोड़ना होगा।

तीसरी और सबसे बड़ी चुनौती इस निर्णायक संघर्ष के लिए किसान आंदोलन की एकता बनाने की है। अब तक दिल्ली के ऐतिहासिक मोर्चे का नेतृत्व करने वाला 'संयुक्त किसान मोर्चा' खनौरी-शम्भू बॉर्डर पर चल रही इस मुहिम के साथ नहीं जुड़ा, हालांकि वह पूरी तरह इस मांग के साथ है। यानी कि देश में किसानों के सबसे बड़े संगठनों की ताकत, अभी भी पूरी तरह इस संघर्ष में नहीं लगी। 'संयुक्त किसान मोर्चा' के जुड़े बिना यह आंदोलन सफलता के मुकाम तक नहीं पहुंच सकता।

बातचीत के कई दौर के बावजूद अनेक सांगठनिक और रणनीतिक कारणों से किसान आंदोलन के दोनों हिस्से जुड़ नहीं पाए हैं। जाहिर है, सरकार यही चाहती है। इतिहास के इस निर्णायक मोड़ पर किसानों, किसान नेताओं और किसान संगठनों को बड़े दिल और बड़ी सोच से काम लेते हुए अब इस आंदोलन को नई दिशा देनी होगी।

अमृतसर के गांव महिलांवाला में एक परिवार 10 एकड़ में कर रहा खेती

पढ़े-लिखे परिवार ने ऑर्गेनिक खेती के लिए ठुकराई लाखों रुपए की नौकरी... अब 150 लोगों को रोज़गार दे रहे

पंजाब से जब आज लोग डॉलर कमाने के चक्कर में विदेश जा रहे है। वहीं, अमृतसर के गांव महिलांवाला का एक ऐसा पढ़ा-लिखा परिवार जिसे विदेशों से नौकरी के ऑफर भी मिले, पर उन्होंने नौकरी को ठुकराकर ऑर्गेनिक खेती को चुना और सोना उगल रहे हैं। परिवार में कोई एम.ए., डब्ल एम.ए. तो कोई एम.एस.सी., बी.एड. है। 10 एकड़ में ऑर्गेनिक खेती कर परिवार देश ही नहीं विदेशों में भी अपना नाम चमका रहा है। खेती में गन्ना, हल्दी, सब्ज़ियों के अलावा नाशपत्ती की भी खेती होती है। कीटनाशकों और खाद की जगह खेती में गोबर, राख, नीम की पत्ती, खली आदि इस्तेमाल की जा रही है। परिवार की सालाना आमदन 12 लाख रुपए है। 150 लोगों को रोज़गार भी दिया है। इसके लिए ये करीब 5 लाख रुपए का भुगकान कर रहे है।

जब पिता कीटनाशक छिड़कते समय बेहोश हो गए, ठान लिया अब देसी तरीके से खेती करेंगे

गांव महिलांवाला के किसान कामरेड जगतार सिंह 2007 में गेहूं के सीज़न में खेतों में कीटनाशक छिड़क रहे थे। इसी दौरान दवा के असर से वे बेहोश होकर गिर गए। इलाज हुआ और ठीक हुए तो उनके मन में यह बात बैठ गई कि जो दवा और खाद छिड़क कर फसल तैयार होती है, वह ज़हरीली होती है। वह चंद रुपयों के लालच के लिए लोगों को ज़हर खिला रहे हैं। उसी दिन उन्होंने संकल्प ले लिया कि अब देसी तरीके से खेती करेंगे। 2008 से उन्होंने ऑर्गेनिक खेती शुरू की। उनके इस काम में उनकी पत्नी बलविंदर कौर और दोनों बेटे रणजीत सिंह और रणजोत सिंह भी हाथ बंटाने लगे। रणजीत सिंह बताते है कि उन्होंने एम.ए. पॉलिटिकल साइंस और एम.एस.सी. कंप्यूटर साइंस में किया, जबकि छोटा भाई रणजोत बी.एस.सी. कंप्यूटर साइंस है। रणजीत की पत्नी शरणजीत कौर एम.ए. है, तो रणजीत की बीवी मनिंदरजीत कौर डबल एम.ए. हैं।

विदेशों में न खाएं धक्के... खेतों में मेहनत करें

रणजीत और रणजोध के मुताबिक वे खेतों से 2 लाख रुपए नाशपाती से, 2 लाख रुपए गुड़ से तो 1 लाख सब्ज़ियों की खेती से कमाई कर रहे हैं। दोनों भाईयों ने युवाओं को संदेश दिया है कि डॉलर के चक्कर में विदेशों में धक्के न खाएं, अपने खेतों में ही मेहनत कर सोना उगाया जा सकता है और रोज़गार दिया जा सकता है।

पाहड़ा गांव के किसान हरबरिंदर सिंह 14 साल से कर रहे जैविक खेती

जैविक उत्पादन बेचने के लिए सही मंडीकरण की दरकार

लाइफ स्टाइल संबंधी और अन्य बीमारियों के मद्देनज़र कई डॉक्टर लोगों को मोटे अनाजों का उपभोग करने की सलाह दे रहे हैं, जिससे उन्हें लाभ हो रहा है। ऐसे में अनेक किसान रासायनिक खेती से छुटकारा पाने के लिए मोटे अनाजों और जैविक तरीके से खेती करने को तरजीह देने लगे हैं। चावल और गेहूं की खेती भी वे इसी तरीके से करने लगे हैं। लेकिन मोटे अनाजों और जैविक उत्पादन का सही मंडीकरण नहीं होने के कारण उनको नुकसान होता है। गुरदासपुर के पाहड़ा गांव के युवा किसान हरबरिंदर सिंह पिछले 14 सालों से जैविक तरीके से लगभग दो सालों से मिलेट्स (मोटे अनाज) की पैदावार कर रहे हैं। उनका कहना है कि पहले वह मिलेट्स की पैदावार कम रकबे में सिर्फ अपने परिवार के लिए करते थे। लोगों में जागरूकता बढ़ी, तो उन्होंने इस बार मिलेट्स के साथ-साथ गेहूं और धान की बुवाई भी जैविक तरीके से करनी शुरू कर दी। इस बार रकबा भी बढ़ा दिया। इस बार धान की पैदावार लेने के बाद उन्होंने खेतों में मसूर, सफेद चना, काला चना, अलसी और मोटे अनाजों में मक्की, जौ, बाजरा, कुटगी, अकोदरा, रागी, मडल, कंगरी आदि की बुवाई कर दी। ये मार्च-अप्रैल तक पक जाएंगी।

जैविक खेती कम मेहनत

हरबरिंदर सिंह के अनुसार, जैविक खेती में मेहनत कम लगती है, लेकिन उत्पादन के लिए सही और अनुकूल मंडीकरण नहीं होने के कारण किसानों को भारी परेशानी होती है। जैविक फसल का झाड़ दूसरी फसलों से कम हो जाता है। अगर सरकारें इन फसलों का सही मंडीकरण करें और अन्य फसलों के मुकाबले कुछ अधिक मूल्य उपलब्ध करवा दें, तो किसानों का नुकसान भी पूरा हो जाएगा तथा अधिक किसान इस तरफ रुख भी करेंगे। उनको फायदा भी होगा। फिलहाल, बड़े कारोबारियों को ही फायदा हो रहा है। ये किसानों से कम कीमत पर फसल खरीद कर अपनी पैकिंग में बेच कर अधिक मुनाफा बना रहे हैं।

खेती दुनिया

द्वारा

किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए

चंदों में विशेष छूट

एक वर्ष 500/- रुपए

दो वर्ष 800/- रुपए

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :

90410-14575

KHETI DUNIYAN
TID - 62763351

चंदे भेजने हेतु QR कोड सकैन करें।

शेष पृष्ठ 3 की

गोभीवर्गीय सब्ज़ियों में कीट नियंत्रण...

चूसते रहते हैं व एक चिपचिपा तरल पदार्थ पत्तों पर छोड़ते है, जिस पर नमी होने पर काली फफूंदी आ जाती है। इससे पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कीट का अधिक प्रकोप होने पर पत्ते मुड़ जाते हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है। तेला कीट पौधों में विषाणु रोग भी फैलाता है।

प्रबन्धन : फूल वाली फसल पर कीट प्रकोप होने पर 1 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50 ई.सी. या 0.5 ग्राम एसिटामिप्रिड 20 एस.पी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। बीज वाली फसल पर पौधों के किनारे पर मिट्टी में 33 किलोग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3 सी.जी. के दाने प्रति हैक्टेयर की दर से मिलायें या फसल पर 1.0 मिलीलीटर डाइमैथोएट 30 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर तेला कीट के आने पर छिड़काव करें।

6. लाल चींटी : कई स्थानों पर लाल चींटियों का आक्रमण पाया गया है। यह चींटियां नवरोपित पौधों की रोंयदार जड़ों और छाल पर पलते हैं तथा प्रभावित पौधे सूख कर मर जाते हैं। रोपाई के समय 2.0 लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. को 25 किलोग्राम सूखी रेत में मिला कर प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में मिलाएं।

7. पेंटिड बग : इस कीट के शिशु व प्रौढ़ पौधों के पत्तों और फलियों से रस चूसते रहते हैं, जिसके कारण बीज सिकुड़ जाता है और उपज में कमी आ जाती है। अधिक प्रकोप होने पर 1.0 मिलीलीटर डाइमैथोएट 30 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। फूल आने पर छिड़काव शाम के समय करें तथा नज़दीक में रखे मौनगृहों के द्वार दूसरे दिन बन्द रखें।

किसान वर्ग अपनी सब्ज़ियों को इन हानिकारक कीटों से सिफारिश किए गए कीटनाशकों का उचित प्रयोग करके बचा सकते है तथा अधिक पैदावार ले सकते है। किसान वर्ग यह भी ध्यान रखे कि किसी भी कीटनाशक का लगातार दो बार प्रयोग न करें। कीटनाशक छिड़काव से पहले तोड़ने लायक सब्ज़ियां तोड़ लें। यह भी ध्यान दें कि फसल पर कीटनाशक के अन्तिम छिड़काव तथा तुड़ाई में कम से कम 7 दिनों का अन्तर अवश्य रहे, जिससे कीटनाशकों के प्रभाव को कम किया जा सके।

चने के प्रमुख रोग एवं उनका निदान

बरखा रानी, कल्पना यादव एवं रमेश कुमार सांप, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)

चने की खेती सिंचित एवं असिंचित दोनों परिस्थितियों में की जाती है। पिछले दो दशकों में सिंचाई की अतिरिक्त सुविधाओं के कारण धान और गेहूं की फसलों ने चने की कृषि योग्य क्षेत्रों को प्रतिस्थापित किया है। धान और गेहूं फसल चक्र के कारण इन खेतों की उर्वरकता में कमी आई है, साथ ही साथ जहां पर धान की खेती के बाद चने की फसल बोने पर चने की बुवाई देर से होती है, जिससे कि तना छेदक कीटों तथा शुष्क मूल विगलन इत्यादि का प्रकोप अधिक होता है। चना की गुणवत्ता रोग व्याधियों के प्रकोप से बहुत प्रभावित होती है। यह प्रोटीन का एक बहुत अच्छा स्रोत होने के कारण चना की खेती रोग एवं व्याधियों के प्रति बहुत संवेदनशील होती है। आमतौर पर उत्तरी, उत्तर–पूर्व और पूर्वी भाग में पत्ती वाले रोग का प्रकोप रहता है। जबकि मध्य और मैदानी भागों में जल वाले रोग चना की फसल को ज्यादा हानि पहुंचाते हैं। इसलिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन के द्वारा पौध संरक्षण के उपायों को अपना कर मिट्टी की उत्पादकता बढ़ाने या बनाये रखने के साथ–साथ कीटों एवं रोगों के संक्रमण से बचाया जा सकता है, ताकि फसलों का कम से कम आर्थिक क्षति हो।

1. चने में फली छेदक:

चने में फली छेदक का प्रबंधन: फली छेदक चने की एक कुख्यात कीट है, जो फसल को भारी नुकसान पहुंचाता है। फली छेदक के कारण पैदावार का नुकसान 21 प्रतिशत तक है। कीट के बारे में बताया जाता है कि चने को लगभग 50 से 60 प्रतिशत नुकसान होता है। चने के अलावा कीट अरहर, मटर, सूरजमुखी, कपास, कुसुम, मिर्च, ज्वार, मूंगफली, टमाटर और अन्य कृषि और बागवानी फसलों पर भी हमला करता है। यह दालों और तिलहनों का एक विनाशकारी कीट है।

संक्रमण: कीट की शुरूआत आमतौर पर अंकुरण के एक पखवाड़े के बाद होती है और यह कली निकलने के शुरूआत के साथ बादल और उमस वाले मौसम में गंभीर हो जाती है। मादा अकेले कई छोटे सफेद अंडे देती है। 3–4 दिनों में अंडे से इल्लियां निकलती हैं, कोमला पत्तियों पर थोड़े समय के लिए खाती हैं और बाद में फली पर आक्रमण करते हैं। एक पूर्ण विकसित इल्ली लगभग 34 मिलीमीटर लंबी, हरी से भूरे रंग की हो जाती है। मिट्टी में चली जाती है, मिट्टी में यह प्यूपा बन जाती है। जीवन चक्र लगभग

30–45 दिनों में पूरा हो गया है। कीट एक साल में आठ पीढ़ियों को पूरा करता है।

प्रबंधन: गर्मियों में गहरी जुताई करें, जिससे ज़मीन में छिपे कीड़े को प्राकृतिक शिकारी खा सकें। 0.5 प्रतिशत जिगरी और 0.1 प्रतिशत बोरिक एसिड के साथ HaNVP 100LE प्रति एकड़ की दर से अंडा सेने की अवस्था पर छिड़काव करें और 15–20 दिनों में दोहराएं। रसायनों के उपयोग में 2.00 मिलीलीटर प्रोफेनोफोस 50 ईसी प्रति लीटर पानी अंडानाशक के रूप में लेना चाहिए। फेरोमोन ट्रेप का उपयोग करें। 4–5 ट्रेप प्रति हैक्टेयर। शुरूआती अवस्था में नीम सीड करनल सत 5 प्रतिशत का स्प्रे करें। यदि संक्रमण अधिक हो, तो इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिलीलीटर या स्पिनोसेड 45 प्रतिशत एस.सी.0. 1 मिलीलीटर या 2.5 मिलीलीटर क्लोरोपाईरीफॉस 20 ईसी प्रति लीटर पानी के अनुसार छिड़काव करें।

2. चना में उकठा या उखेड़ा रोग: यह चना की खेती का प्रमुख रोग है। उकठा रोग का प्रमुख कारक फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम प्रजाति साइसेरी नामक फफूंद से है। यह सामान्यत: मृदा तथा बीज जनित बीमारी है, जिसकी वजह से 10 से 12 प्रतिशत तक पैदावार में कमी आती है। यह एक दैहिक व्याधि होने के कारण पौधे के जीवनकाल में कभी भी ग्रसित कर सकती हैं। इस बीमारी के प्रमुख लक्ष्ण निम्नांकित निम्नांकित हैं:

1. रोग ग्रसित चने के पौधे के ऊपरी हिस्से की पत्तियां और डंठल झुक जाते हैं।
2. चने का पौधा सूखना शुरू कर देता है और मरने के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।
3. सूखने के बाद पत्तियों का रंग भूरा या तांबे जैसा हो जाता है।
4. वयस्क और अंकुरित पौधे कम उम्र में ही मर जाते हैं एवं भूमि की सतह वाले क्षेत्र में आंतरिक ऊतक भूरे या रंगहीन हो जाते हैं।
5. यदि तने को लम्बवत चीरा लगाएंगे, तो तम्बाकू के रंग की तरह धारी दिखाई पड़ती है, लेकिन, यह पतली और लंबी धारी तने के ऊपर दिखाई नहीं देती है।

रोकथाम:

1. चने की बुवाई उचित समय पर यानी अक्तूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक करें।
2. गर्मियों में मई से जून में गहरी जुताई करने से फ्यूजेरियम फॅफूंद का संवर्धन कम हो जाता है। मृदा का सौर उपचार करने से भी रोग में कमी आती है।
3. पांच टन प्रति हैक्टेयर की दर से कम्पोस्ट का प्रयोग करें।
4. बीज को मिट्टी में 8 से 10 सैंटीमीटर गहराई में गिराने से उखड़ा रोग का प्रभाव कम होता है।

5. एक ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टीन) या कार्बोक्सिन या 2 ग्राम थिराम और 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरीडि प्रति किलोग्राम चना बीज की दर से बीजोपचार करें। इसी प्रकार 1.5 ग्राम बेन्लेट टी (30 प्रतिशत बेनोमिल तथा 30 प्रतिशत थिराम) प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार मिट्टी जनित रोगाणुओं को मारने में लाभप्रद है।

6. मिट्टी जनित और बीज जनित रोगों के नियंत्रण हेतु बायोपेस्टीसाइड (जैव कवकनाशी) ट्राईकोडर्मा विरीडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या ट्राइकोडर्मा हरजिएनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर मात्रा को 60 से 75 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 7 से 10 दिन तक छाया में रखने के बाद बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से चने को मिट्टी बीज जनित रोगों से बचाया जा सकता है।

3. शुष्क–मूल विगलन (ड्राई रूट रॉट) : चने का यह मिट्टी जनित रोग है। पौधों में संक्रमण राइजोक्टोनिया बटाटीकोला नामक कवक से फैलता है। मिट्टी में नमी की कमी होने पर और वायु का तापमान 30 डिग्री सैंटीग्रेड से अधिक होने पर बीमारी का गंभीर प्रकोप होता है। सामान्यतया इस बीमारी का प्रकोप पौधों में फूल आने और फलियाँ बनते समय होता है। रोग से प्रभावित पौधों की जड़ें अविकसित एवं काली होकर मुड़ने लगती है और आसानी से टूट जाती हैं। संक्रमण अधिक होने पर पूरा पौधा सूख जाता है और रंग भूरे जैसा हो जाता है। जड़ें काली या भंगुर हो जाती हैं और कुछ या नगण्य जड़ें ही बच जाती हैं।

रोकथाम:

1. फसल चक्र अपनायें। चना बीज का फफूंदनाशक द्वारा बीजोपचार करने से बीमारी के शुरूआती विकास को रोका जा सकता है। समय पर बुवाई करें, क्योंकि फूल आने के उपरांत सूखा पड़ने और तीक्ष्ण गर्मी बलाघात से बीमारी का प्रकोप बढ़ता है। सिंचाई द्वारा इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

4. स्तम्भ मूल विगलन (कॉलर रॉट): चने में इस रोग का कारक स्क्लेरोशियम रॉल्सी नामक कवक है। इसका प्रकोप आमतौर पर सिंचित क्षेत्रों या बुवाई के समय मिट्टी में नमी की बहुतायत, भू सतह पर कम सड़े हुए कार्बनिक पदार्थ की उपस्थिति, निम्न पी.एच.मान और उच्च तापक्रम 25 से 30 डिग्री सैंटीग्रेड होने पर अधिक होता है। अंकुरण से लेकर एक–डेढ़ महीने की अवस्था तक पौधे पीले होकर मर जाते हैं। जमीन से लगा तना और जड़ की संधि का भाग पतला तथा भूरा होकर सड़ जाता है। तने के सड़े भाग से जड़ तक सफेद फफूंद और कवक के जाल पर सरसों के दाने के आकार के स्क्लेरोशिया (फफूंद के बीजाणु) दिखाई देते हैं।

रोकथाम:

1. फफूंदनाशी द्वारा बीज शाधित करके बुवाई करें।
2. आनाज वाली फसलों जैसे–गेहूं, ज्वार, बाजरा को लंबी अवधि तक फसल चक्र में अपनाएं।
3. बुवाई से पूर्व पिछली फसल के सड़े–गले अवशेष और कम सड़े मलबे को खेत से बाहर निकाल दें।
4. बुवाई और अंकुरण के समय खेत में अधिक नमी नहीं होनी चाहिए।
5. कार्बडाजिम 0.5 प्रतिशत या बेनोमिल 0.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

क्रमश:

कोपल के 14वें वार्षिक सम्मेलन में वितरकों को सम्मानित किया गया

कोपल कंपनी के लिए किसान हित सर्वोपरि – संजीव बांसल

बांसल समूह सुलर घराट की कीटनाशक कंपनी कोपल ने संगरूर में अपना 14वां वार्षिक वितरक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें पंजाब के वितरकों ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कोपल कंपनी के एम.डी. श्री संजीव बांसल ने कंपनी के बारे में विस्तार से जानकारी दी और किसानों और डीलरों से मिले प्यार के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि उनके उत्पादों की गुणवत्ता पसंद आना हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि कोपल ने गुणवत्ता के मामले में कभी समझौता नहीं किया है और कोपल उत्पादन के प्रति किसानों की प्राथमिकता ही उनकी वास्तविक आय है। कृषि के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि कंपनी अन्नदाता को धोखा देने के बारे में कभी सोच भी नहीं सकती क्योंकि हमारा राज्य कृषि पर निर्भर है और बढ़ती महंगाई के कारण किसान पहले से ही बदहाली पर है। लेकिन हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि बांसल समूह सुलर घराट पिछले पांच दशकों से पूरी ईमानदारी और विश्वास के साथ किसानों की सेवा कर रहा है और किसान का हित हमारे लिए सबसे पहले है। उन्होंने कंपनी की वृद्धि के लिए अपने डीलरों और कर्मचारियों को श्रेय दिया।

कोपल के निदेशक श्री हैलिक बांसल ने कंपनी द्वारा निर्मित उत्पादों की गुणवत्ता के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि कंपनी द्वारा निर्मित प्रत्येक उत्पाद को आप तक भेजने से पहले हमारे द्वारा अपनी प्रयोगशाला में गुणवत्ता की जांच की जाती है ताकि उत्पाद में कोई खराबी न हो, जिसके कारण किसान कोपल और केमटेक कंपनियों के उत्पादों की मांग करते हैं, यह हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि कंपनी को भारत सरकार से जेड सर्टिफिकेट प्राप्त हुआ है।

कंपनी के रीजनल सेल्स मैनेजर श्री हरजीत सिंह ढिल्ले ने कहा कि पिछले 14 वर्षों से बाजार में किसानों और आपसे जो प्यार और सम्मान हमने कमाया है, वही हमारी असली कमाई है। उसके लिए हम सदैव आपके ऋणी रहेंगे।

कंपनी के सीनियर मैनेजर (सेल्स) हरप्रीत सिंह बराड़ ने कहा कि कंपनी के पास कीटनाशकों और जैव उर्वरकों के 250 से अधिक उत्पादों की पूरी श्रृंखला है। इस मौके पर बांसल ग्रुप के चेयरमैन शाम लाल बांसल ने कहा कि वह कभी भी घटिया काम के समर्थक नहीं रहे हैं।कंपनी मैनेजर (सेल्स) मोहम्मद नासिर, नरिंदर सिंह विर्क और जगदीप सिंह ने कंपनी के उत्पादों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर एक लकी ड्रा भी निकाला गया। जिसमें पुरस्कार के रूप में अलग-अलग रकम के क्रेडिट नोट निकाले गए। प्रथम पुरस्कार के रूप में जिंदल सेल्स एजेंसी बरेटा, न्यू नंदन पेस्टीसाइड्स मालेरकोटला, नत एग्रीकल्चर स्टोर बस्सियां, बाबा पेस्टीसाइड्स गुरुसर जोधा, बोबी एग्रीकल्चर सेवा सेंटर बिहला, पंजाब एग्रो सेंटर सईदा सिंह वाला, आर के एग्रो केमिकल सुनाम, चौधरी किसान सेवा केंद्र भैणी कंबोअन, शिवा ट्रेडिंग कंपनी राजिया, धनोरी पेस्टीसाइड्स धनोरी को क्रेडिट नोट दिए गए। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले वितरकों और कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

अंत में केमटेक के निदेशक श्री नवीन बांसल ने आये हुए सभी वितरकों और अतिथियों को धन्यवाद दिया और भविष्य में भी इसी तरह के प्यार की आशा की। इस अवसर पर कमल शर्मा, मोहित वर्मा व सतगुर सिंह आदि ने भी संबोधित किया।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा मार्च 2025 में लगाए जा रहे

किसान मेले

पी.ए.यू. कैंपस, लुधियाना में दो दिवसीय किसान मेला 21 व 22 मार्च

खेती दुनिया द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

- नाग कलां जहांगीर (अमृतसर) 5 मार्च
- बल्लोवाल सौंखड़ी (शहीद भगत सिंह नगर) 7 मार्च
- फरीदकोट 11 मार्च
- गुरदासपुर 13 मार्च
- बठिण्डा 18 मार्च
- रौणी (पटियाला) 25 मार्च

तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान किसान मेला, दिल्ली में 24 से 26 फरवरी तक